मानमिन समाचार

Manmin Hindi News 785 | 12 April 2026 | वे लोग जो परमेश्वर से मिले

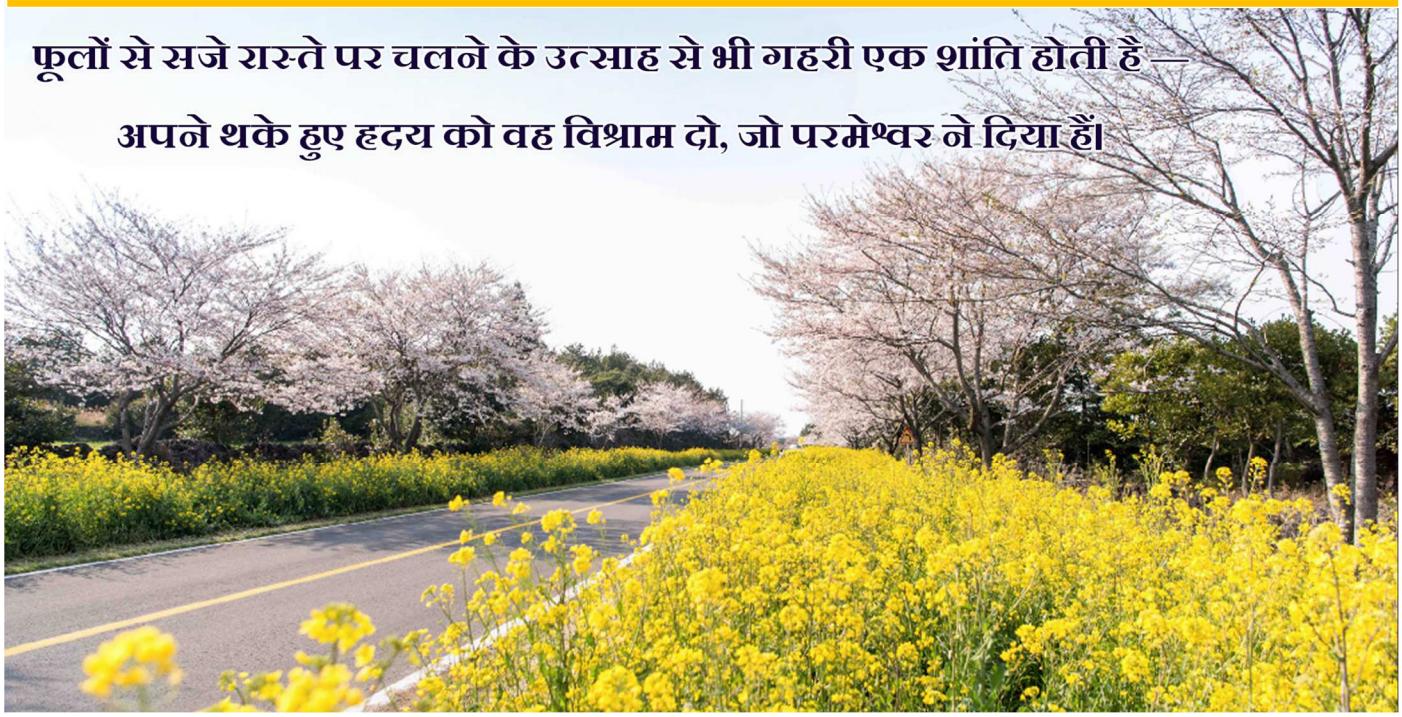

नौ महीनों की बिना नींद वाली रातों के बाद... एक बार बाइबल पूरी पढ़ने के बाद मीठी नींद आशीष मिली

सून-ग्युम ली | महिला, 73 वर्ष, डोंजाक-गु, सियोल

लगभग नौ महीने पहले मुझे अचानक अनिद्रा (नींद न आने की समस्या) होने लगी। शायद यह उम्र की वजह से था, लेकिन मैं कितनी भी कोशिश करूं, मुझे नींद नहीं आती थी। कई बार तो सुबह होने तक, और कभी-कभी सुबह 5 बजे तक भी नींद नहीं आती थी। मुझे आमतौर पर सुबह 8 बजे उठना होता था, इसलिए कई दिनों में मुझे सिर्फ दो या तीन घंटे की नींद लेकर ही दिन की शुरुआत करनी पड़ती थी। इसका असर यह हुआ कि मुझे अक्सर चक्कर आते थे और चलने में लड़खड़ाहट होती थी। मेरी आंखें, जो पहले से मोतियाबिंद की वजह से कमजोर थीं, और भी धुंधली और कमजोर होती जा रही थीं। पिछले साल के आखिरी हिस्से में मैंने बाइबिल पढ़ना शुरू किया, लेकिन आंखों के दर्द की वजह से मुझे बीच में ही रोकना पड़ा। मेरी आंखों में जन्म से कॉर्निया की धुंधलापन (corneal opacity) की समस्या थी, जिसका इलाज आसान नहीं था, और मोतियाबिंद के कारण मेरी दृष्टि और भी खराब होती जा रही थी। फिर मुझे यह एहसास हुआ कि परमेश्वर बाइबिल पढ़ने से कितना आनंदित होते हैं। मैंने अपने आसपास कई लोगों की गवाही सुनी कि बाइबिल पढ़ते समय उन्हें ज्ञान, चंगाई और उत्तर मिले। तब मुझे लगा कि आंखों के दर्द की वजह से बाइबिल न पढ़ पाना सिर्फ एक बहाना है। इसलिए नए साल में दृढ़ निश्चय के साथ मैंने 1 जनवरी से बाइबिल पढ़ना शुरू किया। 28 जनवरी को एक बार पूरी बाइबिल पढ़ने के बाद, मैं 30 जनवरी को दिव्य चंगाई सभा में शामिल हुई। वहां पास्टर सूजिन ली ने बीमारों के लिए प्रार्थना की। उसके बाद एक अद्भुत बात हुई। अगले ही दिन से, जैसे ही मैं लेटती, मुझे नींद आने लगती थी और रात में गहरी और सुकून भरी नींद आने लगी। हल्लेलुयाह!इसके अलावा, बाइबिल एक बार पूरी पढ़ने के बाद मैंने पास्टर जैरॉक ली की किताब “Men of Flesh, Men of Spirit” पढ़ी। उसमें परमेश्वर का वचन बहुत ही स्पष्ट और सरल तरीके से समझाया गया था, जिसे समझना बहुत आसान था। जब मैं आराधना (वर्शिप) में शामिल होती, तो मेरा ध्यान और अधिक केंद्रितहो गया, और संदेश का हर एक शब्द मुझे बहुत मधुर लगता था।मैं उस परमेश्वर को सारा धन्यवाद और महिमा देती हूँ, जिसने मेरी अनिद्रा को ठीक किया और मुझे इतनी मीठी और सुकून भरी नींद दी।

मेरे पैरों के तलवों का दर्द, जो मुझे सात वर्षों से परेशान कर रहा था, अब पूरी तरह समाप्त हो गया है।

ए-जिन सियो | महिला, 57 वर्ष, ग्यूमचॉन-गु, सियोल

पिछले दस से भी अधिक वर्षों से मैं एक रेस्टोरेंट चला रही हूँ, जहाँ मैं रसोई में काम करने के साथ-साथ ग्राहकों को सेवा भी देती हूँ। पूरे दिन खड़े रहना और बिना रुके लगातार काम करते रहना धीरे-धीरे मेरे शरीर पर असर डालने लगा। शुरुआत में कोई खास समस्या नहीं थी। बल्कि मुझे खुशी होती थी कि मैं अपने काम में व्यस्त रह पा रही हूँ। लेकिन कुछ वर्षों बाद मेरे पैरों के तलवों में दर्द होने लगा। यह दर्द खासकर तलवों के आगे के हिस्से में था, लेकिन शुरुआत में मैंने इसे गंभीरता से नहीं लिया और सोचा कि यह जल्द ही ठीक हो जाएगा। लेकिन यह दर्द आसानी से खत्म नहीं हुआ। कभी थोड़ा ठीक होता, फिर वापस आ जाता—और ऐसा सात वर्षों से भी अधिक समय तक चलता रहा। समय के साथ यह दर्द सिर्फ असुविधा नहीं रहा, बल्कि दैनिक जीवन को कठिन बनाने लगा। खासकर पिछले साल दिसंबर के मध्य से यह समस्या और बढ़ गई। सुबह उठते समय मुझे लंगड़ाकर चलना पड़ता था, और काम करते हुए कई बार मैं गिरते-गिरते बची। हर दिन दर्द से भरा होता था, और मेरे मन में डर आने लगा कि "क्या मैं यह काम जारी रख पाऊँगी?" जैसे-जैसे कठिनाई बढ़ती गई, मैं उतनी ही अधिक लगन से परमेश्वर पर निर्भर होती गई। हर सुबह काम पर जाने से पहले मैं मन लगाकर प्रार्थना करती थी, और जब भी समय मिलता, मैं सीनियर पास्टर के प्रवचन सुनती थी। रविवार की आराधना में मैंने पास्टर सूजिन ली से बीमारों के लिए प्रार्थना भी प्राप्त की, और चंगाई के लिए पूरी तरह परमेश्वर पर भरोसा किया। बिना हार माने, मैं लगातार प्रार्थना करती रही और विश्वास के साथ आगे बढ़ती रही। इसी बीच, 17 जनवरी शनिवार को, मैं अपने क्षेत्र की नववर्ष सभा में शामिल हुई और पास्टर सूजिन ली का संदेश सुना। उनका संदेश मेरे लिए बहुत प्रेरणादायक था और इससे मुझे यह विश्वास और मजबूत हुआ कि परमेश्वर मेरे साथ हैं। संदेश के बाद उन्होंने सभी के लिए आशीर्वाद की प्रार्थना की और हर व्यक्ति से हाथ मिलाकर अभिवादन किया। सभा के बाद मैं अपने रेस्टोरेंट वापस आई और रोज की तरह काम करने लगी। उस दिन काम बहुत ज्यादा था और पूरा दिन भागदौड़ में बीता। शुरुआत में मुझे अपने शरीर में कोई बदलाव महसूस नहीं हुआ। लेकिन काम खत्म होने के बाद अचानक मेरे मन में ख्याल आया— "अरे! आज मेरे पैरों में दर्द नहीं हो रहा...?" उसी क्षण मुझे एहसास हुआ कि जो दर्द मुझे इतने लंबे समय से परेशान कर रहा था, वह गायब हो चुका है। अगले दिन भी यही हुआ। चाहे मैं कितनी देर खड़ी रही या कितना भी व्यस्त रही, मेरे पैरों में कोई दर्द नहीं हुआ। सात वर्षों से चला आ रहा दर्द पूरी तरह समाप्त हो गया। हल्लेलुयाह! इस पूरे अनुभव के माध्यम से मुझे यह समझ में आया कि परमेश्वर ने न केवल पास्टर सूजिन ली की प्रार्थना के द्वारा मुझे चंगा किया, बल्कि मेरे व्यवसाय पर भी आशीष दी। मेरा हृदय आश्चर्य और कृतज्ञता से भर गया, और दर्द के कारण जो डर और चिंता थी, वह पूरी तरह समाप्त हो गई। अब, बिना किसी दर्द के, मैं आराम से रसोई और ग्राहकों के बीच काम कर पाती हूँ। पहले जहाँ हर दिन निकालना मुश्किल था, अब वही काम मेरे लिए खुशी और आनंद का कारण बन गया है। हर दिन कृतज्ञता और प्रसन्नता से भरा हुआ है। मैं उस परमेश्वर को सारी धन्यवाद और महिमा देती हूँ, जिन्होंने मुझे चंगा किया।

यह कार्यक्रम 6 भाषाओं में डब किया गया है
(अंग्रेज़ी, चीनी, जापानी, स्पेनिश, रूसी और फ़्रेंच)
और 13 भाषाओं में सबटाइटल उपलब्ध हैं
(अंग्रेज़ी, चीनी, जापानी, स्पेनिश, रूसी, फ़्रेंच,
उर्दू, हिंदी, स्वाहिली, तमिल, रोमन और हिब्रू)।

https://mbstudy.com/
GCNTV HINDI
Live Telecast on Youtube
यूट्यूब पर सीधा प्रसारण
Contact:
+91 99716 24368

सीढ़ियों से गिरने की दुर्घटना में झुकी हुई मेरी पीठ अब सीधी हो गई है।

मैन-सून ली | महिला, 80 वर्ष, सिहेउंग, ग्योंगगी

20 जून 2023 को, जब मैं जल्दी में घर से बाहर निकल रही थी, तब सीढ़ियों से उतरते समय ऑटोमैटिक दरवाज़े के सामने फिसल गई और मुझे गंभीर चोट लग गई। इस दुर्घटना के कारण मेरी पीठ झुक गई और मेरी रीढ़ तथा दाहिने पैर में तेज दर्द होने लगा। दिन मैं अपने बेटे के साथ अस्पताल गई, जहाँ जांच के बाद मुझे रीढ़ की चोट (स्पाइनल इंजरी) का निदान हुआ। मैंने दवाइयाँ और फिजियोथेरेपी शुरू की। लगभग दस दिनों तक एक्यूपंक्चर उपचार भी लिया, लेकिन मेरे लक्षणों में कोई सुधार नहीं हुआ। दुर्घटना के बाद मेरी पीठ धीरे-धीरे और अधिक झुकती गई। चलते समय मुझे सीने में जकड़न महसूस होती थी। जब मैं बाज़ार जाती, तो मुझे कई बार रुककर आराम करना पड़ता था, और मुझे आगे झुककर चलना पड़ता था। रात में मैं सीधा लेट नहीं पाती थी और करवट लेकर सोना पड़ता था। लगातार इलाज के बावजूद मेरी स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया। फिर मैंने अपने विश्वास के बारे में विचार किया और महसूस किया कि मैं परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में रखकर जीवन नहीं जी रही थी। जब मैंने पश्चाताप किया और प्रार्थना की, तो मेरे मन को शांति मिलने लगी। 29 नवंबर 2024 को, मैंने दिव्य चंगाई सभा में बीमारों के लिए प्रार्थना प्राप्त की। उस समय मैं घर से ही मोबाइल के माध्यम से सभा में शामिल हुई और चंगाई की सच्ची इच्छा के साथ पास्टर सूजिन ली की प्रार्थना प्राप्त की। उस रात मैंने प्रार्थना की, "कृपया मुझे सोते समय भी चंगा कर दीजिए," और फिर सो गई। अगली सुबह मैं बाहर गई और चलने की कोशिश की। मुझे आश्चर्य हुआ कि मेरी झुकी हुई पीठ सीधी हो चुकी थी, और मैं लगभग बिना दर्द के चल पा रही थी। अगले दिन रविवार की आराधना के बाद, परिवर्तन इतना स्पष्ट था कि मैंने पास्टर मिग्योंग ह्वांग से भी कहा कि ऐसा लगता है जैसे मेरी पीठ पूरी तरह सीधी हो गई है। आज भी, चंगाई प्राप्त करने के एक वर्ष से अधिक समय बाद, मैं बिना किसी दर्द के अपनी पीठ सीधी रखकर स्वस्थ जीवन जी रही हूँ। मैं उस परमेश्वर को सारा धन्यवाद और महिमा देती हूँ, जिन्होंने मुझे चंगा किया।

मेरे घुटने के कार्टिलेज (उपास्थि) के दर्द से मुझे चंगाई मिली।

मी-जा जंग | महिला, 55 वर्ष, ग्वांगम्योंग, ग्योंगगी

नवंबर 2024 से मुझे घुटनों में दर्द रहने लगा था। घुटनों के बल बैठने या बैठने के बाद उठने में दर्द होता था, और रात में भी दर्द के कारण अक्सर नींद नहीं आती थी। यहाँ तक कि लेटे हुए करवट बदलना भी मुश्किल हो गया था।18 अक्टूबर 2025 को अस्पताल में जांच कराने पर पता चला कि मेरे घुटने का कार्टिलेज (उपास्थि) घिस चुका है। मैंने इंजेक्शन भी लगवाए, लेकिन दर्द सिर्फ एक-दो दिन के लिए ही कम होता था और फिर वापस आ जाता था। मैंने अपने आप पर विचार किया और पश्चाताप किया, यह समझते हुए कि मैं पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भर नहीं थी और बार-बार दूसरों का न्याय और दोष निकालती थी। GCN पर डैनियल प्रार्थना सभा में भाग लेते समय, पास्टर सूजिन ली की यह प्रार्थना—"जो चीज़ें पुरानी या कमजोर हो गई हैं, उन्हें भी चंगा करें"—मेरे दिल में बस गई, और मुझे चंगाई का विश्वास मिला। 4 नवंबर को डैनियल प्रार्थना सभा में प्रार्थना प्राप्त करने के बाद, उसी रात जब मैंने सोते समय करवट बदली, तो मैंने देखा कि कोई दर्द नहीं था। सुबह उठकर चलने पर भी दर्द नहीं हुआ, और आज भी मैं बिना किसी तकलीफ के स्वस्थ जीवन जी रही हूँ। मैं उस परमेश्वर को सारा धन्यवाद और महिमा देती हूँ, जिन्होंने मुझे चंगा किया।

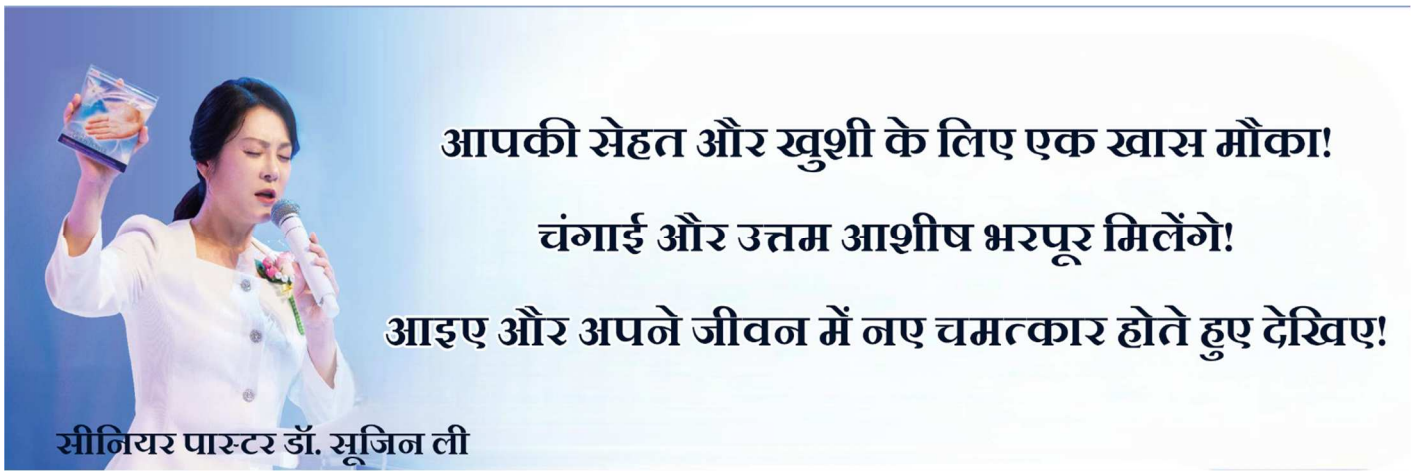

जल और आत्मा से जन्म (1) फरीसी लोग मूसा की व्यवस्था का बहुत कड़ाई से पालन करते थे और अपने पूर्वजों की परंपराओं को अत्यंत महत्व देते थे। वे पुनरुत्थान, स्वर्गदूतों, अंतिम समय (एस्कैटोलॉजी) और मसीहा के आगमन पर विश्वास करते थे। वे इस्राएल के प्रमुख वर्ग में गिने जाते थे और परमेश्वर के प्रति अपनी भक्ति पर गर्व करते थे। फिर भी, यीशु ने उन्हें कड़ी फटकार लगाते हुए कहा, "हाय तुम पर!" क्योंकि वे बाहर से तो पवित्र दिखाई देते थे, लेकिन भीतर से पाप से भरे हुए थे—जैसे सफेदी किए हुए कब्र। यद्यपि वे परमेश्वर के वचन को सिखाने की स्थिति में थे, फिर भी वे यीशु के सत्य को नहीं पहचान पाए और उन्हें अस्वीकार कर उनके प्राण लेने की कोशिश करने लगे।

1. निकुदेमुस—एक अच्छे हृदय वाला व्यक्ति निकुदेमुस एक फरीसी था, लेकिन उसका हृदय अच्छा था। उसने यीशु के चिन्हों और अद्भुत कामों को देखकर यह पहचान लिया कि वे "परमेश्वर की ओर से आए हैं" (यूहन्ना 3:2)। वह यहूदियों की सर्वोच्च परिषद, सनहेद्रिन का सदस्य था—एक ऊँचे पद, अधिकार, धन और प्रतिष्ठा वाला व्यक्ति।

उसने यीशु में एक विशेष अधिकार को महसूस किया, जो चिन्हों और चमत्कारों के द्वारा सुसमाचार का प्रचार करते थे। लोगों की नजरों से बचते हुए वह रात के समय यीशु के पास गया, क्योंकि उसे लोगों की प्रतिक्रिया का डर था। लेकिन यीशु से मिलने के बाद वह बदल गया। उसने आलोचना करने वाले फरीसियों के सामने यीशु का पक्ष लिया और कहा,

"क्या हमारी व्यवस्था किसी मनुष्य का न्याय किए बिना, पहले उसकी बात सुने और जाने कि वह क्या करता है?" (यूहन्ना 7:51) एक यहूदी अधिकारी के लिए ऐसा कहना आसान नहीं था, क्योंकि इससे उसका पद छिन सकता था या उसे सताया जा सकता था। फिर भी, निकुदेमुस ने यीशु के पक्ष में बात की—यह उसके सच्चे हृदय और दृढ़ विश्वास को दिखाता है।

निकुदेमुस भी जो पहिले यीशु के पास रात को गया था पचास सेर के लगभग मिला हुआ गन्धरस और एलवा ले आया। तब उन्होंने यीशु की लोथ को लिया और यहूदियों के गाड़ने की रीति के अनुसार उसे सुगन्ध द्रव्य के साथ कफन में लपेटा। (यूहन्ना 19:39–40)। 2. यीशु और निकुदेमुस के बीच आत्मिक वार्तालाप निकुदेमुस ने यीशु से मिलकर कहा, "रब्बी, हम जानते हैं कि आप परमेश्वर की ओर से शिक्षक बनकर आए हैं; क्योंकि जो चिन्ह आप करते हैं, वे कोई नहीं कर सकता जब तक परमेश्वर उसके साथ न हो।" यीशु के द्वारा किए गए चमत्कार—जैसे मरे हुओं को जिलाना, अंधों को दृष्टि देना और गूंगों को बोलने योग्य बनाना—देखकर निकुदेमुस ने सच्चे मन से विश्वास किया कि यीशु स्वर्ग से आए हैं। लेकिन यह सुनकर यीशु ने कहा "जब तक कोई नया जन्म न ले, वह परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकता।" यह बात उन्होंने निकुदेमुस को उसकी आत्मिक अज्ञानता से जगाने के लिए कही। निकुदेमुस ने उत्तर दिया "मनुष्य जब बूढ़ा हो जाए, तो कैसे जन्म ले सकता है? क्या वह फिर से अपनी माँ के गर्भ में जाकर जन्म ले सकता है?" क्योंकि वह आत्मिक रूप से जागृत नहीं था, इसलिए उसने शारीरिक दृष्टि से प्रश्न किया। तब यीशु ने समझाया "मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, जब तक कोई जल और आत्मा से जन्म न ले, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है। आश्चर्य मत करो कि मैंने तुम से कहा, 'तुम्हें नया जन्म लेना आवश्यक है।'"

(यूहन्ना 3:5–7) इस प्रकार यीशु सिखा रहे थे कि स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए हर व्यक्ति को जल और आत्मा से नया जन्म लेना आवश्यक है ताकि उसकी आत्मा जीवित हो सके।